Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / December 2024 / Special Issue 1 Volume I

03

आपदा प्रबंधन एवं समाज की भूमिका

प्रा. नाडेकर राजाराम देवराम
श्री सप्तशृंगी कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय डांगसौंदाणे, ता.बागलान, जि.नाशिक

आपदा प्रबंधन के बारे में बात करे तो हम कोई भी आपदा आयी तो अकेला मनुष्य नही बल्की पुरा समाज उसके चपट में आता है, इसलिए उसका सामना पुरे समाज को करना पडता है| और उसका मसला प्रथम समाज को धुंढना पडता है | बाद में दुसरे या अन्य कोई उसकी भूमिका निभाता है |आइए 'आपदा' की समीक्षा करें। "प्राकृतिक आपदा एक ऐसी घटना है जो पृथ्वी की प्राकृतिक शक्तियों के कारण होती है जिसमें बहुत अधिक क्षति होती है और कभी-कभी जानमाल का नुकसान भी होता है। प्राकृतिक आपदाएँ कई रूप ले सकती हैं, जिनमें भूकंप और सुनामी से लेकर बाढ़ और ज्वालामुखी विस्फोट, भूस्खलन और जंगल की आग तक शामिल हैं।"

समाज की भूमिका- आपदा प्रबंधन सामाजिक कार्यकर्ताओं को मानव-जनित और प्राकृतिक दोनों प्रकार की विनाशकारीघटनाओं का जवाब देने में विशेषज्ञता प्राप्त होती है, तथा उन्हें व्यक्तिगत और सामुदायिकआधारित पुनरुद्धार,पुनर्विकास और पुनरोद्धार को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। कोई ऐसा प्राकृतिक अथवा मानव जनित ऐसी घटना जो समाज के सामान्य जनजीवन में गंभीर व्यवधान उत्पन्न कर दे, जिसके परिणाम स्वरूप बहुत बड़े स्तर पर जान, माल, प्रकृति तथा अन्यनुकसान हो और जिसको प्रभावित समाज अपने संसाधनों से पुर्नस्थापित नही कर सकता हो। तथा भारत सरकार सभी सरकारी एजेंसियों, गैर-सरकारी संगठनों और लोगों की भागीदारी के निरंतर और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से प्राकृतिक और मानव-निर्मित आपदाओं से होने वाली क्षति और विनाश को कम करने के लिए एक राष्ट्रीय संकल्प को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। हम आपदा को कम करने में समाज की विशेष भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है | हम सब समुदाय के अंग है | अत: आपदारहित जीवन जीने के लिए हम सबको मिलकर,जागरूक रहकर आपदा प्रबंधन की गतविधियों में जोऱ-शोर से भाग लेकर अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिये|
आपदा प्रबंधन में समुदाय या समाज की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है|

आपदा प्रबंधन में समाज की भूमिका इस प्रकार है:-

- आपदा से निपटने में समुदाय/समाज के प्रयासों का अहम योगदान होता है|
- समाज ही सही अनुमान लगा सकता है, कि किसी आपदा से कितनी हानि हुई है|
- आपदा से पहले ही समाज से ही आपदा के पूर्वानुमान की सूचना मिलती है|
- आपदाओं का सामना सबसे पहले समाज तथा समुदाय के लोग ही करते हैं|
- समाज के नेतृत्व में कई काम सफलतापूर्वक किए जाते हैं|

आपदा प्रबंधन में समाज की भूमिका से जुड़ी कुछ और बातें :-

- आपदा प्रबंधन में सामाजिक कार्यकर्ताओं और मानव की भूमिका भी अहम होती है |
- समाज में कार्यकर्ताओं को मानव-जनित और प्राकृतिक दोनों तरह की आपदाओं से निपटने में विशेषज्ञता हासिल होती है.
- आपदा प्रबंधन में एनजीओ भी अहम भूमिका निभाते हैं| ये एनजीओ सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने का काम करते हैं|
- जनसंचार माध्यम भी आपदा प्रबंधन में अहम भूमिका निभाते हैं. यह राहत पैमानों को टेलीकास्ट करते हैं, और आपदाओं की निरंतर जांच प्रक्रिया का प्रसारण करते हैं|

आपदा राहत में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका-महत्वपूर्ण बात यह है कि इस क्षेत्र में सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्राकृतिक और मानव-चालित दोनों तरह की आपदाओं का जवाब देने में सक्षम होना चाहिए। इस तरह की आपदाओं में राष्ट्रों या राज्यों के बीच हिंसक संघर्ष, ज्वालामुखी विस्फोट, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का पिघलना और बर्फानी तूफान जैसी अलग-अलग घटनाएँ शामिल हो सकती हैं। जबकि इस तरह की हर घटना में अलग-अलग तरह की चुनौतियाँ होती हैं और उसके अलग-अलग परिणाम होते हैं, आपदा प्रबंधन में सामाजिक कार्यकर्ताओं को इस उम्मीद के साथ विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है कि इन घटनाओं के पीड़ितों को विशेष सहायता की आवश्यकता होगी। इस तरह के व्यवसायी आपदा से पहले, उसके दौरान और उसके बाद पीड़ितों के लिए विशिष्ट सहायता रणनीतियों का उपयोग करके इन अपेक्षाओं को पूरा करने में मदद कर सकते हैं।
आपदा प्रबंधन में समुदाय की केन्द्रीय भूमिका निम्नलिखित हैं :-जब किसी प्रकार की आपदा आती है, उसके कोई भी एक इंसान अकेले नहीं निपट सकता है। किसी आपदा से निपटने के लिए सामुदायिक प्रयास ही बेहतर होता है। किसी भी आपदा हमें कितनी

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / December 2024 / Special Issue 1 Volume I

हानि हुई, इसका सही अनुमान समुदाय ही लगा सकता है। आपदा से निपटने के लिए समुदाय का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, अगर सुविधाओं को सही ढंग से वितरित नहीं किया गया। तो, आपदा झेलने वाले प्रत्येक परिवार तक उसका लाभ नहीं पहुँच पाएगा। किसी प्रकार के आपदा के पूर्वानुमान की सूचना की जानकारी हमें समुदाय से ही प्राप्त होती है तथा इन आपदाओं का सामना सबसे पहले समुदाय के लोग ही करते हैं। आपदा आने पर हमारे सभी चीजें हमसे छीन सकती हैं। हमारा मकान जल सकता है, बाढ़ आ सकती है, किसी प्रकार की महामारी फैल सकती है, पर हमारा समुदाय कभी नहीं टूटता है। हर सुख-दुख में समुदाय हमारा साथ देता है। समुदाय के नेतृत्व में बहुत से कार्यों को सफलतापूर्वक किया जाता है ,जैसे-प्रशासनिक प्रबंधन कार्य, स्वयंसेवी संस्थाओं का प्रबंधन का कार्य इत्यादि।"आपदा संघटन की तैयारी गतविधियों के सर्वोत्तम उदाहरण हैं, सामुदायिक शिक्षा के माध्यम से स्थानीय चेतावनी और सामुदायिक निकासी योजनाओं का विकास, समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन दल (डिएमटी) जैसे स्थानीय प्रतिक्रिया ढांचे का विकास करता है | इस शोधपत्र का लक्ष्य यह जांचना है, कि समुदाय किस तरह आपदाओं के प्रभाव को कम कर सकते हैं। संकट के दौरान समुदाय को प्राथमिकता देना इसकी रोकथाम, तैयारी, शमन, प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है। आधिकारिक सहायता के आने से पहले, संकट पर प्रतिक्रिया करना और साथी नागरिकों की सहायता करना रक्षा की पहली पंक्ति है। यह खोजपूर्ण अध्ययन सूचना और द्वितीयक डेटा पर आधारित है जो प्रासंगिक स्रोतों से प्राप्त किए गए थे। अध्ययन का डिज़ाइन वर्णनात्मक प्रकृति का है, जो समुदाय की पहलों और गंभीर परिस्थितियों से बचने के लिए उठाए जाने वाले कदमों को रेखांकित करता है। समुदाय-आधारित आपदा प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए, भारत के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने 2016 में आपदा मित्र योजना शुरू की। बच्चे, विकलांग लोग और अल्पसंख्यक समूहों के सदस्य कमज़ोर आबादी में से हैं जिनकी ज़रूरतें CBDM द्वारा पूरी की जाती हैं, जिसे शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता, परिवहन और संचार सहित कई क्षेत्रों में लागू किया जाता है।" **बहुविषयक अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल** खंड 6, अंक 1, जनवरी-फरवरी 2024

समुदाय के सदस्य किसी भी आपदा के प्रभाव को कम करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी भी आपदा से प्रायः समुदाय के आम लोग ही ज्यादा प्रभावित होते हैं। ... अतः शुरू से ही आपदा प्रबंधन कार्यक्रम में स्थानीय समुदायों के लोगों को शामिल किया जाना चाहिये क्योंकि यह आपदा प्रबंधन की क्षमता को विकसित करता है। प्राकृतिक आपदाओं के परिणामस्वरूप अक्सर मौतें, चोटें, बीमारियाँ और अन्य नकारात्मक शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव होते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से, आपदाओं के परिणामस्वरूप सामाजिक शिकायतें और संसाधनों की कमी हो सकती है, जो सामाजिक संघर्षों को ट्रिगर कर सकती है। यह सिर्प समुदाय तथा समाज को परिणाम भुगतना पडता है | एसिलिए आपदा प्रबंधन सर्वप्रथम समाज ही करता है, समाज राहनेवाले लोग, जानवर या अन्य सामग्री को आपदा का प्रभाव पडता है,औऱ इसी निपटने के लिए समाज हमेशा तैयार रहता है |

जो लोग संभावित खतरों से बचने और अधिक आपदा जोखिमों को रोकने के लिए भू-स्थानिक उपायों पर भरोसा करते हैं, उनके लिए कई विकल्प बहुत प्रभावशाली हो सकते हैं। जोखिम मूल्यांकन और योजना: जीआईएस का उपयोग बाढ़, भूकंप, जंगल की आग या तूफान जैसे विभिन्न खतरों से ग्रस्त क्षेत्रों का आकलन और मानचित्रण करने के लिए किया जा सकता है। किसी आपदा से निपटने के लिए सामुदायिक प्रयास ही बेहतर होता है। किसी भी आपदा हमें कितनी हानि हुई, इसका सही अनुमान समुदाय ही लगा सकता है। आपदा से निपटने के लिए समुदाय का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, अगर सुविधाओं को सही ढंग से वितरित नहीं किया गया। तो, आपदा झेलने वाले प्रत्येक परिवार तक उसका लाभ नहीं पहुँच पाएगा।

आपदा प्रबंधन में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका पर चर्चा की गई है। सामाजिक कार्यकर्ता आपदा से पहले (आपदा से पहले) और आपदा के बाद (आपदा के बाद) दोनों स्थितियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आपदा से पहले की स्थितियों में, उनकी भूमिकाओं में नीति विकास, जोखिम और भेद्यता आकलन, रोकथाम और शमन गतिविधियाँ, तैयारी योजना और आपदा जोखिम में कमी शामिल हैं। आपदा के बाद की स्थितियों में, सामाजिक कार्यकर्ता क्षति का आकलन करने, पीड़ितों को सहायता प्रदान करने, आपदा प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति प्रयासों का समन्वय करने और पुनर्वास कार्यक्रमों को सुविधाजनक बनाने में सहायता करते हैं। दस्तावेज़ आपदा प्रबंधन के प्रत्येक चरण में सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के बारे में विवरण प्रदान करता है। 'आपदा प्रबंधन में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका' में 'उज़मा अब्बास शिराज़ी' कहा है |

संधर्भ सूची.....

१. बहुविषयक अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल खंड 6, अंक 1, जनवरी-फरवरी 2024
२. 'उज़मा अब्बास शिराज़ी' 16 जून, 2017
३. इंटरनेट माध्यम
४. सोशल वर्क अंश (Social Work Degrees) आपदा प्रबंधन में सामाजिक भूमिका